यमुना नदी के दायीं तट पर आगरा में स्थित ताजमहल विश्व के सर्वाधिक प्रसिद्ध स्मारकों में से एक है। इसका निर्माण मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी प्रिय पत्नी अर्जुमन्द बानो बेगम (जो कि मुमताज महल के नाम से प्रसिद्ध है) की याद में करवाया था।

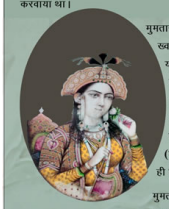

मुमताज महल महारानी नूरजहाँ की भतीजी और ख्वाजा अबुलहसन आसफ खान, जिनकी पदवी यामिन–उद्–दौला था, की बेटी थी। इनकी माँ का नाम "दीवान जी बेगम" था। मुमताज महल 27 अप्रैल, 1593 को लाहौर में पैदा हुई थी। बचपन में वह नूरजहाँ की तरह खूबसूरत थी। वयस्क होने पर इनका राजकुमार खुर्रम (शाहजहाँ) से प्रेम हो गया था और दोनों शीघ्र ही विवाह के बंधन में बँध गये।

मुमताज महल हृदय से दयालु थी। अपने पति के साथ शाही कोष से गरीबों और अनाथों की मदद करना तथा विधवाओं का विवाह करवाना उनको अच्छा लगता था तथा उन्होंने इनको जमीनें भी दी। इसका प्रमाण घुले (महाराष्ट्र) में रखे एक शाही हुक्मनामे (जिस पर उनकी मुहर अंकित है) में देखा जा सकता है।

शाहजहाँ और मुमताज महल हृदय से एक दूसरे को असीम प्यार करते थे। यहाँ तक कि वह सैन्य अभियान में भी उनके साथ रहती थी। सम्राट के बुरहानपुर कैम्प के समय में भी वह उनके साथ थी। यहाँ उसने अपने चौदहवें शिशु को जन्म दिया एवं भयंकर रूप से बीमार हो गई। दिनांक 17 जून, 1631 को वह क्रूर दिन आया जब मृत्यु के निर्दयी हाथों ने मुमताज महल को सम्राट से छीन लिया। मुमताज महल के निधन से उसके सपने चकनाचूर हो गये और वह लगभग दो साल तक शोकग्रस्त रहा। मुमताज महल का शव "अस्थायी कब्र" के रूप में बुरहानपुर में था। अब सम्राट ने साम्राज्ञी की याद में एक अनोखा स्मारक बनाने का निश्चय किया जिसके समान पूरे विश्व में अन्य कोई इमारत न हो।

दिनांक 12 दिसम्बर, 1631 को मुमताज महल के पार्थिव शव (ताबूत) को राजकुमार शाहशुजा द्वारा आगरा लाकर प्रस्तावित मस्जिद के दक्षिण–पूर्व में निर्मित एक अस्थाई कब्र में रखा गया। इसे वर्तमान में भी पीले बलुए पत्थर के घेरे के रूप में देखा जा सकता है।

शाहजहाँ ने विख्यात शिल्पियों को मकबरे की योजना बनाने हेतु आमंत्रित किया। उसके दरबार के इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी द्वारा लिखित "बादशाहनामा और शाही फरमान" के अनुसार मकबरे के लिए चयनित स्थल आमेर (राजस्थान) के कछवाहा राजा की चार हवेलियों के रूप में था, जिसको सम्राट द्वारा आपसी सहमति व आदान–प्रदान के जरिये प्राप्त किया गया था।

ताजमहल – रूपरेखा

ताजमहल की रूपरेखा तुर्की के निवासी उस्ताद–ईसा–अफन्दी द्वारा बनाई गई। लाहौर निवासी अहमद लाहौरी और मीर अब्दुल करीम द्वारा ताजमहल के निर्माण का पर्यवेक्षण किया गया। शाहजहाँ का काल मुगल कला व स्थापत्य का स्वर्णयुग माना जाता है। बादशाह को कला का विशिष्ट अनुभव था। उसने अपने जीवनकाल में अनेक स्थलों की यात्रा कर उत्कृष्ट स्मारकों जैसे होशंगशाह का मकबरा, मान्डू (सन् 1435 में निर्मित) से प्रभावित होकर श्वेत संगमरमर के मकबरे के भव्य और इसके वर्गाकार चबूतरे की कल्पना की। मीराक मिर्जा ग्यास द्वारा (1565–1569 ई.) में बनाये हुमायूँ के मकबरे की रूपरेखा और गुम्बद से प्रेरणा ली। सन् 1627 में निर्मित खान–ए–खाना अब्दुर्रहीम खान के दिल्ली स्थित मकबरे ने भी उसको आकर्षित किया। साम्राज्ञी नूरजहाँ द्वारा, 1621–1628 ई. में बनवाये "एत्माद–उद्–दौला" के मकबरे में उत्कृष्ट पच्चीकारी (पेट्राड्यूरा) एवं "झि–तला" भवन की कला को भी स्थान दिया गया। शाहजहाँ से पूर्व मुगल स्मारकों में लाल बलुआ पत्थर का प्रचुर प्रयोग किया गया लेकिन इस काल में सम्राट के संरक्षण में प्रचुर मात्रा में श्वेत संगमरमर और अर्द्ध–पारदर्शी पत्थरों की महीन पच्चीकारी ने मुगलकला को बरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया था।

निर्माण–सामग्री

राजस्थान के मकराना व निकटवर्ती स्थानों से लाये गये श्वेत संगमरमर का प्रयोग मुख्य स्मारक में बाहरी सतह पर प्रचुरता से किया गया है। मकबरे को छोड़कर अन्य भागों में तांतपुर, बंसी–पहाड़पुर, करौली–हिण्डौन और फतेहपुर सीकरी से लाये गये लाल–पीले बलुए पत्थर का प्रयोग किया गया है। उच्च गुणवत्ता वाले चूने के मसाले एवं स्थानीय तौर पर निर्मित ककड़या ईंट (लखौरी ईंट) से भवन की मोटी–मोटी दीवारें बनायी गयी हैं। वस्तुतः स्मारक की आन्तरिक संरचना ईंट की दीवारों से बनी है जिसके बाहरी स्वरूप को संगमरमर का आवरण दिया गया। चूने के मसाले का अनुपात 1 : 1 : 1 – 2, (1 चूना : 1 रुक्ष रेत : 1 से 2 सुर्खी) रखा गया। अबुल फजल द्वारा लिखित एक सूची में चूने के मसाले को मजबूती प्रदान करने के लिए सन, गोंद (समंग), सीरिस–ए–काही और सुर्खी (ईंट का चूरा) मिलाने का उल्लेख है। पच्चीकारी में प्रयुक्त रंगीन पारदर्शी पत्थर श्रीलंका, तिब्बत, चीन और अफगानिस्तान आदि देशों से लाये गये।

ताजमहल का निर्माण

ताजमहल का निर्माण कार्य दिनांक 12 दिसम्बर, 1631 को प्रारम्भ हुआ। इस "उद्यान–शमिय" मकबरे का निर्माण इस्लामी "जन्नत उद्यान" की कृति के रूप में 410 लाख रुपये, 500 किलो सोना और लगभग 20,000 कारीगरों की मदद से दिनांक 6 फरवरी, 1643 को 13 वर्ष में जन्नतनशीं मुमताज महल के 12 वें उर्स तक हो चुका था। प्रवेश द्वार पर अंकित तिथि के अनुसार मकबरे का निर्माण सन् 1647–48 तक पूर्ण हुआ माना जाता है। ताजमहल की पच्चीकारी में लगभग 50 प्रकार के "पारदर्शी" व "अर्द्ध पारदर्शी" रंगीन पत्थरों का प्रयोग किया गया है।

ताजमहल की ऊँचाई 74.09 मी. है। ताजमहल की नींव संरचना की तकनीक मुगलकालीन अभियन्त्रण का एक चमत्कारिक प्रमाण है। इसकी नींव में पत्थर और मजबूत चूने के गारे से निर्मित 12.19 मी. गहरे, 2.74 मी. व्यास के साल की लकड़ी के बन्धन से भरे हुए कुँओं की एक शृंखला बनी है। ताजमहल यमुना नदी के किनारे स्थित एक अद्भुत और विशाल संरचना है। दिलचस्प तथ्य यह भी है कि दिल्ली में यमुना नदी मीलों तक अपना मार्ग बदला है परन्तु ताजमहल के पीछे में यह अब भी अपने मूल मार्ग पर प्रवाहमान है।

ताज–गुम्बद

ताजमहल के मुख्य गुम्बद को "अब्दुल हमीद लाहौरी" और "मुहम्मद सलीह कम्बो" ने "गुम्बद–ए–अमरूदी" के रूप में वर्णित किया है। गुम्बद की ऊपरी सतह को कमल की बड़ी–बड़ी पंखुड़ियों के आकार के अलंकरण से सुशोभित किया गया है।

इस द्वि–तलीय गुम्बद की ऊँचाई 44 मी. है। इसके चारों कोनों पर सुन्दर छतरियाँ बनाई गई हैं। यह संरचना संभवतः होशंगशाह के मांडू स्थित मकबरे के स्थापत्य से प्रभावित है।

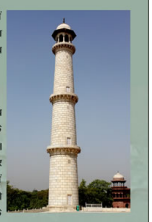

चार मीनारें

40 मी. ऊँची मीनारों, जिनके शीर्ष अष्टकोणीय खुली छतरियों से सुशोभित हैं, को मुख्य चबूतरे के चारों कोनों पर खूबसूरती के साथ प्रयोग किया गया है। यह अकबर के मकबरे के प्रवेश द्वार के ऊपर निर्मित चार मीनारों से साम्य रखता है। इन "त्रि–तलीय" मीनारों की प्रथम–तल की वीथि का फर्श, मकबरे के फर्श की सीध में है एवं तीसरे तल की वीथि का फर्श, मकबरे के ऊपरी गुम्बद के फर्श की सीध में है।

संगमरमर जाली

ऊपर की कब्रों की संगमरमर की जालियाँ कब्रों की सुरक्षा की दृष्टि से लगाई गई थीं। यह जालियाँ अत्यन्त खूबसूरत एवं दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र है।

कब्रें

मुमताज महल की कब्र हॉल के ठीक मध्य में है। यह फूलों की पच्चीकारी से सज्जित एक आयताकार चबूतरे पर निर्मित है। शाहजहाँ की कब्र आकार में बड़ी है और मुमताज महल की कब्र से पश्चिम की ओर निर्मित है। अन्य मुगल मकबरों की तरह मूल कब्रें भूतल में बनी हैं और उनकी प्रतिरूप ऊपर प्रथम तल पर बनी हैं।

चार बाग

मुगल साम्राज्य के प्रथम शासक बाबर ने भारत में पहली बार उद्यान–स्थापत्य में "चारबाग" पद्धति का प्रयोग किया। शाहजहाँ स्थापत्य कला के साथ–साथ उद्यान का भी शौकीन था। उसने कश्मीर के रणमल से "चारबाग–उद्यान" की रूपरेखा बनवाई। उद्यान को चार वर्गाकार भागों में विभाजित कर दो मुख्य मार्ग एवं प्रत्येक वर्गाकार भाग को पुनः चार वर्गाकार भागों में बाँटकर उनके मध्य भी लघु मार्गों को बनाया गया है। दोनों मुख्य मार्गों के मध्य नहर बनाकर उसको फव्वारों से सुशोभित किया गया है। इन फव्वारों के लिए नहरों में पानी फारसी–चक्र (Persian wheels) प्रणाली द्वारा बैलों के माध्यम से ऊँचाई तक पहुँचाया जाता था तथा उद्यान की सिंचाई के लिए भी इसी पानी का प्रयोग किया जाता था।

मस्जिद और मेहमानखाना (जमात खाना)

लाल बलुए पत्थर से मस्जिद और मेहमान खाना का निर्माण ताजमहल के मुख्य मकबरा के क्रमशः पश्चिम एवं पूर्व में रंग–संयोजन को निखारने एवं दृश्य संतुलन हेतु किया गया है। मस्जिद के समीप वजू हेतु एक वर्गाकार हौज बनाया गया है और मेहमानखाने के सामने भी एक हौज का निर्माण मूलतः समानता लाने हेतु किया गया है।

लेखन कला (कैलीग्राफी)

प्रवेश द्वार की मेहराब व इसके दोनों ओर, मुख्य मकबरे की मेहराब के दोनों ओर और मुख्य गुम्बद की दीवारों पर पच्चीकारी के रूप में अंकित कुरान की पवित्र आयतें (Suras & Verses) और अल्लाह के 99 नामों का अंकन इसके वैभव में चार चाँद लगा देता है। इन आयतों के अक्षरों का संयोजन नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः बड़े आकार में किया गया है ताकि देखने व पढ़ने में इनका आकार एक समान दिखाई दे।

ताजमहल यथार्थ में विभिन्न कलाकृतियों का सूक्ष्मता के साथ खूबसूरत समायोजन, संगमरमर में चमत्कारिक कृत्य और इस्लामी स्थापत्य की अद्भुत कृति है। इसके व्यापक प्रचार एवं संरक्षण हेतु 1983 में यूनेस्को द्वारा इसे विश्व–विरासत घोषित किया गया।

यह स्मारक पूर्ण रूप से स्थापत्य कला की अति उत्तम व कौशलपूर्ण मानव निर्मित संरचना है। इसको एक कल्पना, एक स्वप्न, एक कविता और एक आश्चर्य के

सार्वजनिक सूचना :–

समस्त नागरिकों को सूचित किया जाता है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित स्मारकों/स्थलों के प्रतिनिषिद्ध/विनियमित क्षेत्र में किसी भी मरम्मत/भवन नवीनीकरण/वास्तु संरचना आदि के निर्माण के पूर्व (प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम 1958 एवं नियम 1959 तथा प्राचीन संस्मारक एवं पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (संशोधन एवं विधिमान्यकरण) अधिनियम 2010 के प्रावधानों के तहत) सक्षम प्राधिकारी/राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण की अनुमति आवश्यक है।

- संरक्षित स्मारकों और संरक्षित क्षेत्रों के न्यूनतम "प्रतिनिषिद्ध क्षेत्र" और "विनियमित क्षेत्र" की सीमाएं संरक्षित क्षेत्र से क्रमशः 100 मी. और प्रतिनिषिद्ध क्षेत्र के आगे 200 मी. निर्धारित की गई हैं।
- प्रतिनिषिद्ध क्षेत्र में किसी सार्वजनिक परियोजना अथवा अन्य किसी प्रकार के निर्माण की अनुमति नहीं है।
- प्रतिनिषिद्ध क्षेत्र में 16 जून 1992 से पूर्व हुये निर्माणों में भी मुरम्मत/जीर्णोद्धार आदि के लिए सक्षम प्राधिकारी की अनुमति आवश्यक है।
- उपरोक्त अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन करने पर दो वर्ष का कारावास या एक लाख रूपये का जुर्माना या दोनों से दण्डित किये जाने का प्रावधान है।
- भारत सरकार द्वारा अपने राजपत्र में प्रकाशित अधिसूचना में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, आगरा मण्डल, आगरा द्वारा संरक्षित स्मारकों/स्थलों के प्रतिनिषिद्ध एवं विनियमित क्षेत्रों में मरम्मत/निर्माण के लिए अनुमति के सम्बन्ध में अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करने के लिए मण्डलायुक्त, आगरा को सक्षम प्राधिकारी घोषित किया गया है।
- *माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार ताजमहल की संरक्षित सीमा से 500 मीटर के क्षेत्र में किसी भी प्रकार का नवनिर्माण प्रतिनिषिद्ध है।*

कृपया:–

- स्मारक को साफ सुथरा रखने में सहयोग दें।
- स्मारक के प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने में सहयोग दें।
- यदि कोई व्यक्ति स्मारक को किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचाता दिखे तो उसे रोकें व सम्बन्धित अधिकारी को सूचित करें।
- अपनी विरासत की महत्ता को समझते हुए इसकी सुरक्षा हेतु जन संचेतना के प्रचार–प्रसार में सहयोग दें।
- स्मारक की गरिमा को बनाए रखें।
- यह स्मारक एक अमूल्य धरोहर है, इसे सहेज कर गौरवान्वित महसूस करें।

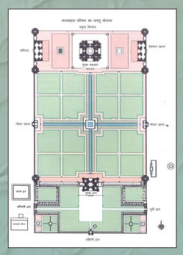

प्रकाशक

अधीक्षण पुरातत्वविद्

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

आगरा मण्डल, 22 माल रोड, आगरा–282001

दूरभाष सं०. 91-562-2227261 / 63 Fax-91-562-2227262

ई–मेल:- circleagr.asi@gmail.com

वेबसाइट : www.asiagracircle.in

विभागीय वेबसाइट : www.asi.nic.in

© भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

जुलाई 2013

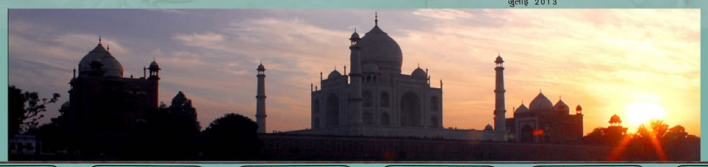

ताजमहल

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
आगरा मण्डल, आगरा